International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-1 January- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

कोरोनावायरस के हमारे समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉक्टर अमित चिकारा

असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)

बरेली कॉलेज, बरेली

सारांश -

पृथ्वी पर इतने लंबे जीवन काल का यह पहला मौका है जिसने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया। करीब 100 साल पहले प्लेग ने ऐसा ही कहर बरपाया था। मलेरिया, हैज, चेचक के बाद भारत में बीमारियों ने समय- समय पर आंशिक क्षति पहुंचाई । 2004 में सार्स का प्रकोप हुआ परंतु यह कोई 19 विश्व महामारी या विश्व युद्ध का रूप ले लेगा इसकी कल्पना भी नहीं की होगी। कोरोना वायरस विश्व युद्ध के हमारे समाज पर पड़े प्रभाव को इस शोध पत्र से प्रत्यक्ष रूप से समझा जा सकता है जिसके फलस्वरूप धरती पर सुखद बदलाव दुखद परिस्थितियों के चलते हुए हैं। हमने मानव जीव सृजन की क्षमता की ओर कदम बढ़ा दिए हैं और तब भी एक विषाणु जनित बीमारी से त्रस्त है। कोरोना वायरस महामारी ने स्पष्ट कर दिया है कि विकास और समृद्धि को नए सिरे से परिभाषित करने का उपयुक्त समय है जो सामाजिक, व पारिस्थितिक संतुलन के संदर्भ में मापी जा सके न की बढ़ती भौतिकवादी जीवनशैली के रूप में।

प्रस्तावना-

प्रकृति पृथ्वी की जननी ही नही, बल्कि पूरा ब्रह्मांड इसी के प्रताप से चलता है। पिछले कई दशकों से मनुष्य ने पृथ्वी पर अपना वर्चस्व बनाते हुए हर तरह की विलासिता व सुविधाओं की आड़ में कई तरह की मनमानियां की हैं। दुनिया से लगभग 10,00,000 पेड़ पौधौं एवं वन्य जीवों की प्रजातियों को समाप्त कर दिया गया। इस तंत्र के बिगड़ने का मतलब पूरे सिस्टम पर चोट पहुंचाना है। दुनिया के हर देश और हर व्यक्ति ने इस तंत्र को बिगाड़ने में भूमिका निभाई है जिसके दुष्परिणाम किस तरह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में हमारे सामने आए हैं इसका आंकलन शोधार्थी ने अपने इस शोध पत्र के माध्यम से करने का प्रयास किया है।

कोरोनावायरस बीमारी (कोविड-19) ने जीवन के हर क्षेत्र जैसे व्यावसायिक प्रतिष्ठान, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, धर्म, परिवहन, पर्यटन, रोजगार, मनोरंजन, खाद्य सुरक्षा, खेल आदि को प्रभावित किया है। इसका प्रकोप वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा अस्थिर करने वाला खतरा है।

हालाँकि, इस प्रकोप ने कई अवैध गतिविधियों जैसे कि अमेज़ॅन वर्षावनों की कटाई, अफ्रीका में अवैध शिकार, पर्यावरण कूटनीति के प्रयासों में बाधा उत्पन्न की, और आर्थिक गिरावट पैदा की है। भविष्य के कुछ अनुमान हरित ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में निवेश को धीमा कर देंगे।

जैसे-जैसे दुनिया भर में कोरोनावायरस के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं, वैसे-वैसे समाज पर इसका प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। जबकि वैश्विक आबादी ने दिन-प्रतिदिन के जीवन में अत्यधिक परिवर्तन का अनुभव किया है, शोधकर्ताओं ने बीमारी को रोकने और दुनिया को लॉकडाउन से बाहर लाने के लिए पिछले एक साल में टीके और उपचार विकसित करने के लिए अथक प्रयास किया है। दूर-दराज के काम और घर-विद्यालय के बच्चों से लेकर यात्रा और अवकाश गतिविधियों को प्रतिबंधित करने, आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित करने तक कोरोनावायरस महामारी का जीवन के लगभग हर पहलू पर अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा है।

हाल ही में कोरोनावायरस महामारी का जनसंख्या पर महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव पड़ा है। इस अनुसंधान ने बच्चों, कॉलेज के छात्रों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं सहित सबसे अधिक सामाजिक समूहों के मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर प्रकाश डाला है, जिनमें अभिघातजन्य तनाव,विकार, चिंता, अवसाद और संकट के अन्य लक्षण विकसित होने की अधिक संभावना है। सामाजिक दूरी और सुरक्षा उपायों ने लोगों के बीच संबंधों और दूसरों के प्रति सहानुभूति की उनकी धारणा को प्रभावित किया है। इस दृष्टिकोण से, महामारी के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए टेलीसाइकोलॉजी और तकनीकी उपकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये उपकरण ऐसे लाभ प्रस्तुत करते हैं जो ऑनलाइन रोगियों के मनोवैज्ञानिक उपचार में सुधार कर सकते हैं, जैसे घर से या कार्यस्थल से मिलने की संभावना, पैसे और समय की बचत करना और चिकित्सक और रोगियों के बीच संबंध बनाए रखना। इस शोध पत्र का उद्देश्य महामारी के प्रभाव पर हाल के अध्ययनों से अनुभवजन्य डेटा दिखाना और तकनीकी उपकरणों के आधार पर संभावित हस्तक्षेपों को प्रतिबिंबित करना है।

शोध का औचित्य

प्रस्तुत शोध हमारे समाज पर कोरोनावायरस के प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए किया गया है। यह शोध हमारे समाज के लोगों में कोरोनावायरस के हम पर पड़ने वाले सामाजिक प्रभाव के बारे में जागरूकता लाने के लिए है। यह शोध कुछ परिणाम लाता है जिनकी चर्चा हमने इस अध्ययन के अंतर्गत की है। सामाजिक कार्यकर्ताओं, सामुदायिक कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवकों की समय पर की गयी कार्रवाई योग्य स्वास्थ्य जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ताकि लोग जान सकें कि कैसे अपनी रक्षा करना है और कोरोनावायरस रोग 2019 से जुड़े जोखिमों को कम करना है।

इसलिए, इस शोध के माध्यम से शोधार्थी ने अपने समाज पर कोरोनावायरस के प्रभाव के प्रत्येक पहलू का विश्लेषण किया है।

आंकड़ों का विश्लेषण-

अपने इस अध्ययन में शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि द्वारा प्रत्यक्ष साक्षात्कार एवं प्रश्नावली की सहायता से उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के कुछ साक्ष्य एकत्रित किए और उनके आधार पर समाज की विभिन्न गतिविधियों विशेषकर शिक्षा पर कोरोना वायरस के पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया।

निष्कर्ष स्वरूप शोधार्थी ने पाया कि मुजफ्फरनगर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ शिक्षा के नकारात्मक पहलू सामने आए वहाँ शहरी क्षेत्रों में ऑनलाइन कक्षाओं के द्वारा शिक्षा के स्तर को ऊंचा करने और शिक्षा के आधुनिकीकरण में कोरोना वायरस की विशेष भूमिका रही।

विश्व स्तर पर कोरोनावायरस के शिक्षा पर प्रभाव

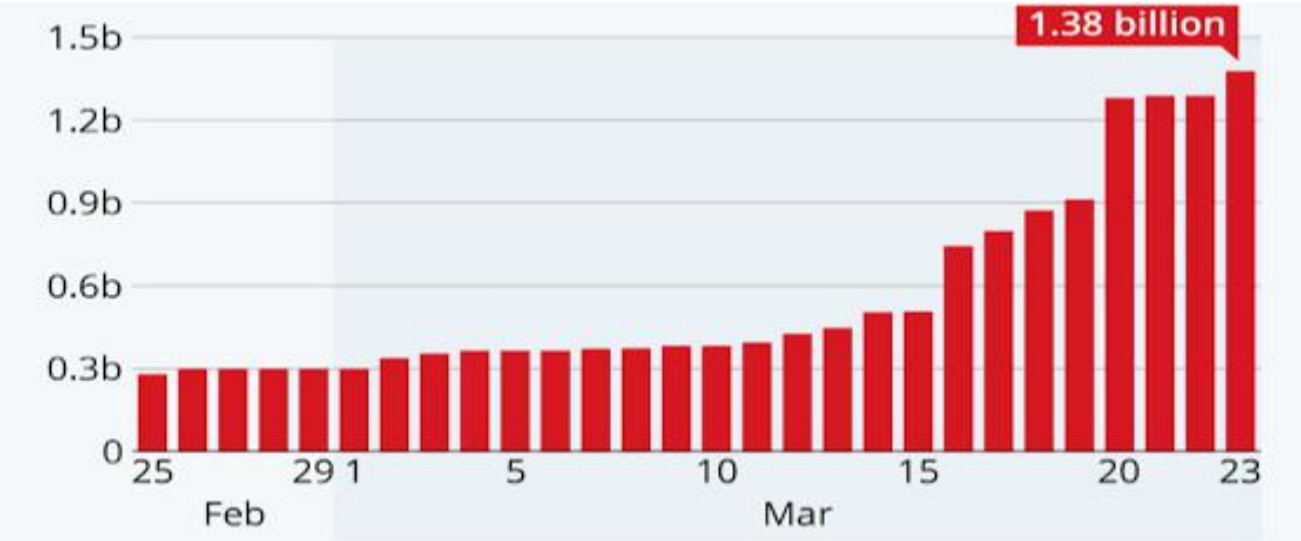

प्रस्तुत ग्राफ विश्व स्तर पर छात्रों की संख्या में वृद्धि को दर्शाता है जिसके अध्ययन से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कोरोना वायरस ने बहुत तीव्रता से छात्रों को शिक्षा के करीब लाने का कार्य भी किया है।

मनोवैज्ञानिक प्रभाव

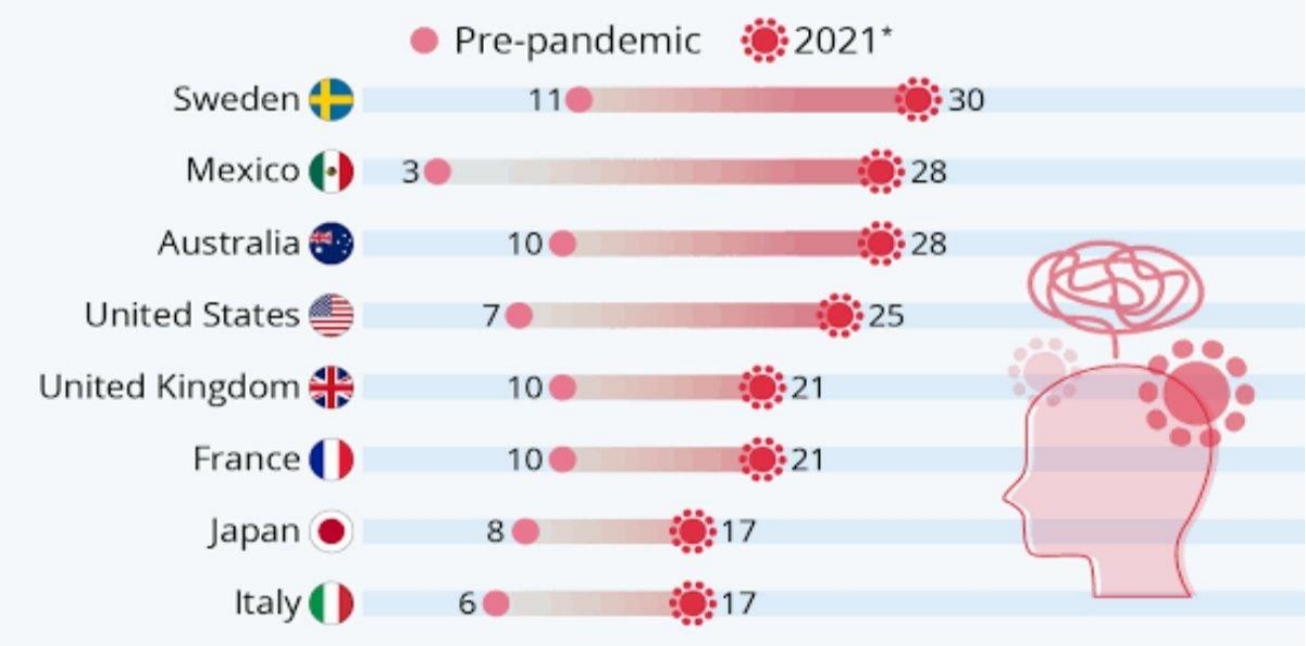

वैश्विक स्तर के आंकड़ों

के अध्ययन से पता चलता है कि कोविड के कारण, हमारा समाज गंभीर अवसाद और चिंता से पीड़ित है। महामारी मानसिक स्वास्थ्य में नकारात्मक ढलान लाती है।

सकारात्मक सामाजिक प्रभाव

•भोजन की कम बर्बादी :

कोरोनावायरस महामारी इतनी घातक थी कि लोग अपने घरों से बाहर निकलने से भी डरने लगे। वायरस की संचारी प्रकृति ने लोगों के लिए एक-दूसरे पर भरोसा करना असंभव बना दिया है। इसलिए, जैसे ही लोगों ने बाहर जाना बंद कर दिया, उन्होंने अपने दोस्तों और अपने प्रियजनों के साथ स्थानीय रेस्तरां में घूमना बंद कर दिया। विभिन्न रिपोर्टों से पता चलता है कि एक रेस्तरां में लगभग 4-15% भोजन बेकार हो जाता है। इसलिए, जैसे-जैसे रेस्तरां बंद हुए, खाने की बर्बादी में भारी कमी आई।

•<u>जरूरतमंदों की देखभाल</u>:

लोगों को उनकी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने के लिए अक्सर एक बड़ी समस्या की आवश्यकता होती है। इस लॉकडाउन ने लोगों को यह महसूस करने में मदद की। वे वंचित लोगों और समाज के दिव्यांगों के प्रति अधिक संवेदनशील हो गए, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने धर्मार्थ ट्रस्टों को दान दिया। उन्हें पता चला कि इन लोगों की खास जरूरतें होती हैं और ये हमेशा हमारे साथ और दोस्ती के भूखे रहते हैं।

*सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव :

कोरोना वायरस विश्व युद्ध के हमारे समाज और संस्कृति पर पड़े प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। समाज में जैसे वैदिक संस्कृति का पुनरागमन हो गया है ,लोग अपने परिवार के बीच रहकर संतुलन और सामंजस्य के भाव को महत्व दे रहे हैं। माता पिता के संपर्क में सांस्कृतिक चीजों का भी लाभ ले रहे हैं। आध्यात्मिकता की ओर हमारा समाज उन्मुख होता दिखाई दे रहा है, घरों में हवन पूजा पाठ पहले से अधिक बढ़ गए हैं, प्राचीन संस्कृति का विकास हो रहा है।

वातावरण की शुद्धता :

कोरोना वायरस के चलते ठप्प हुई इंसानी गतिविधियों के फलस्वरूप प्रकृति का निखरता रूप इंसानों की ज्यादतियों की कलई खोलने को काफी है। दशकों से नदियों को साफ करने की सरकारी और सामाजिक मुहिम उनका जल निर्मल न कर सकी, महज चंद दिनों के लॉक डाउन में विषाक्त हो चले नदियों के पानी में चेहरा देखा जा सकता है। आज हर शहर अच्छी व बेहतर हवा का दम भर सकता है। मतलब यह है कि हम ही थे जिन्होंने इन्हें मार रखा था । हमारी तालाबंदी के एक छोटे से अंतराल ने इनके हालात सुधार दिए इसे ही समझने की आवश्यकता है कि प्रकृति या पृथ्वी का ज़रा सा खयाल हमारे बेहतर दिन वापस ला सकता है।

प्रदाताओं के साथ अधिक नियमित और सहायक संचार का उद्घाटन, जिसमें साप्ताहिक कॉल शामिल है। आयुक्तों, प्रदाताओं और सामुदायिक समूहों को एक साथ लाने के लिए ऑनलाइन मंचों का निर्माण। प्रदाताओं के लिए अतिरिक्त कोविड संबंधित लागतों का दावा करने के लिए आपातकालीन निधि उपलब्ध कराना।

स्थानीय स्थानों में जहां संयुक्त कार्य करने का मजबूत इतिहास था, संकट की प्रतिक्रिया समन्वय करना आसान था, क्योंकि साझेदारी के ट्रैक रिकॉर्ड वाले साझेदार एक-दूसरे तक पहुंचे और समाधान पर एक साथ काम किया।

नकारात्मक प्रभाव

कोरोनावायरस महामारी ने तनाव के लंबे समय तक संपर्क को जन्म दिया। नतीजतन, शोधकर्ताओं ने जनसंख्या को मनोवैज्ञानिक रूप से समर्थन देने के लिए सामाजिक और सामुदायिक बेचैनी को मापने में रुचि दिखाई। यह बढ़ा हुआ ध्यान वर्तमान स्थिति और अन्य संभावित महामारियों के प्रबंधन में मदद कर सकता है। निवेश की गई सामाजिक भूमिका के अनुसार, महामारी के प्रबंधन में अपनाए गए सुरक्षा उपायों के व्यक्तियों पर अलग-अलग परिणाम हुए। जनसंख्या के कुछ वर्ग चिंतित, अवसादग्रस्त और अभिघातजन्य लक्षणों के जोखिम के प्रति अधिक संवेदनशील प्रतीत होते हैं क्योंकि वे तनाव के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।जैसा कि हाल ही में कोरोनावायरस महामारी के दौरान प्रशासित एक सर्वेक्षण में बताया गया है, बच्चों और युवा वयस्कों में विशेष रूप से चिंताजनक लक्षण विकसित होने का खतरा होता है।

कोरोना का कहर आज देश की अर्थव्यवस्था को भी चोट पहुंचा रहा है। दुनिया का मंदी की चपेट में आना अब एक हकीकत है। जैसे आज विश्व अर्थव्यवस्था घुटनों के बल आ गई है वैसे ही सॉस और एनएच-1 के संक्रमण के दौरान भी उसे बहुत नुकसान उठाना पड़ा था। आज आधुनिक आर्थिक से जुड़ी तमाम इंसानी गतिविधियां ठप है। इस महामारी से सबसे अधिक अमेरिका और यूरोप के देश तो पीड़ित हैं। भारत अधिक आबादी वाला विकासशील देश है और यहां एक बड़ी संख्या उन लोगों की है जो गरीबी रेखा से नीचे है और जो रोज़ कमाने खाने वाले हैं इसलिए पश्चिमी देशों के मुकाबले उससे कहीं अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है रोजगार में अहम योगदान देने वाले कई सेक्टरों की पकड़ ढीली होती जा रही है।

कोरोनावायरस कम लड़ाइयों और कम संघर्ष की उम्मीदें भी बढ़ा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप शांति के स्तर में वृद्धि हुई है। संयुक्त राष्ट्र ने कोरोनावायरस के सामने सभी युद्धों को समाप्त करने का आह्वान किया क्योंकि दुनिया एक आम दुश्मन का सामना करती है: यह लॉकडाउन पर सशस्त्र संघर्ष करने का समय है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि कोरोनावायरस का हमारे समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभाव पडा है।

सकारात्मक में ऑनलाइन शिक्षा में वृद्धि, लोगों को एक साथ लाना, एकता की शिक्षा देना और बहुत कुछ शामिल हैं।

नकारात्मक में हमारे प्रियजनों की मौत, इकट्ठा होने से रोकना, लोगों की दिनचर्या में खलल डालना और बहुत कुछ शामिल है।

ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या इस महामारी रूपी विश्वयुद्ध को झेलने के बाद हम अपनी जीवनशैली और समाज के प्रति अपने रुख में बदलाव ला सकेंगे? क्या विकास की बात के साथ हम अपने समाज और प्रकृति की पीड़ा को भी ध्यान में रखेंगे ? वैसे भी अपने देश में सदियों से घर बाहर की स्वच्छता को ही चरित्र व्यवहार का आधार माना गया हैं । " शरीर मध्यम खलु धर्म साधनम्" यही सिखाता है और उससे सबक न ले सकें तो कोरोना से ही ले लें जिसने लाखों के जीवन को जरूर छीना हो पर यह तो दिखा ही दिया कि सब बेहतर हो सकता है बशर्ते हम नियमों में रहे ।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1.दैनिक जागरण, मेरठ 19 जून 2020 पृष्ठ संख्या 6

2.नवभारत टाइम्स, 7 अक्टूबर 2021 पृष्ठ संख्या 5

3.दैनिक जागरण मुजफ्फरनगर, 8 दिसंबर पृष्ठ संख्या 6,7

4.हिंदुस्तान मेरठ, 6 नवंबर 2021 पृष्ठ संख्या 4

5.अमर उजाला मुजफ्फरनगर, 25 दिसंबर 2021 पृष्ठ संख्या 3,4

6.अमर उजाला, 2 जनवरी 2022 पृष्ठ संख्या 3,5

7. http://en.unesco.org

8. http://www.who.int

9. Wikipedia. Org